भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान
जी.टी. रोड, रावतपुर, कानपुर – 208 002
(उत्तर प्रदेश)
An ISO 9001:2015 Certified

(O) : (0512) 2533560, 2554746
Fax : (0512) 2533560, 2554746
Website : http://atarik.res.in
E-mail : zpdicarkanpur@gmail.com

दिः 10–06–2020

समूहबद्ध प्रथमपंक्ति प्रदर्शन दलहन/तिलहन पर राष्ट्रीय समीक्षा बैठक का आयोजन

आज दिनाँक 10 जून 2020 को समूहबद्ध प्रथमपंक्ति प्रदर्शन दलहन/तिलहन पर राष्ट्रीय समीक्षा बैठक का कृषि प्रसार विभाग भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली ने आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. ए.के. सिंह उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार) ने की। इस कार्यक्रम में डा. त्रिलोचन महापात्र, सचिव कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान एवं महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, कृषि आयुक्त डा. एस.के. मलहोत्रा, भारत के कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थानों के निदेशकगण, जोन–3, कानपुर के निदेशक डा. अतर सिंह, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख तकनीकी अधिकारी, सहायक महानिदेशक मुख्यालय ने समीक्षा बैठक में भाग लिया। इस बैठक में विभिन्न क्षेत्रों के निदेशक अटारी ने संबंधित वर्ष 2019–20 की प्रदर्शन दलहन/तिलहन की प्रगति व वर्ष 2020–21 की कार्ययोजना का प्रस्तुतीकरण किया। कुल 40 से अधिक प्रतिभागियों ने समीक्षा बैठक में सहभागिता की।

महानिदेशक भा.कृ.अनुप. नई दिल्ली ने समीक्षा बैठक में अनेक बहुमूल्य सुझाव दिए तथा इस कार्यक्रम की महत्वता को देखते हुए इस वर्ष कृषि आयुक्त, भारत सरकार से आग्रह किया कि समूहबद्ध प्रथमपंक्ति प्रदशनों की संख्या एवं धनराशि में बढ़ोत्तरी की जाए। समीक्षा बैठक में उन्होंने अटारी से अपेक्षा की कि यह कार्यक्रम देश के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से वर्ष 2015–16 से संचालित किया जा रहा है। इन प्रदर्शनों के परिणामों का लाभ कितने लोगों तक पहुँचा, प्रयुक्त तकनीकी जैसे स्प्रिंकलर सिंचाई, उर्वरक, बीमारी, कीट नियंत्रण, खरपतवार नियंत्रण एवं नई प्रजाति का समावेश आदि से जो सफलता मिली है उस तकनीकी का कृषि विभाग को परिवर्तित (कन्वर्जेन्स) किया जाए।

इस अवसर पर कृषि आयुक्त ने चाहा कि सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों से समय पर उपभोग प्रमाणपत्र/आडिट उपभोग प्रमाणपत्र उपलब्ध कराये, जिससे प्रदर्शनों का लक्ष्य एवं उसके अनुरूप समय से बजट अवमुक्त किया जा सके। दलहन, तिलहन उत्पादन के साथ किसानों को प्रसंस्करण इकाईयाँ स्थापित करा कर उत्पादित प्रसंस्करित उत्पाद की ग्रेडिंग, पैकिंग, ब्राण्डिंग से किसानों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए एवं उन्हें स्थानीय रूप से एवं देश के अन्य प्रदेशों में बाजार से जोड़कर अधिक लाभ हेतु जोड़ा जाना भी कार्यक्रम की सफलता का

मापदण्ड है। प्रदर्शनों के अभिलेखों का रखरखाव तथा सफलता के मापदण्डों पर सफलता की ओर अग्रसर किसानों का ब्योरा भी संजोया जाना आवश्यक है, इस कार्यक्रम में सफल किसानों की गाथा तैयार कर अन्य किसानों तक प्रसार माध्यमों से पहुँचाया जाये। इस अवसर पर इफको एवं भा.कृ.अनुप., नई दिल्ली के बीच एक इकरारनामा किया गया जिसमें लक्षित कृषकों को वित्तीय एवं तकनीकी से लाभान्वित किया जा सके।

उपमहानिदेशक कृषि प्रसार द्वारा इस कार्यक्रम के अन्तर्गत देश में 35000 हैक्टेअर क्षेत्रफल पर प्रदर्शनों के आयोजन का प्रस्ताव वर्ष 2020–21 हेतु प्रस्तुत किया जिसके सापेक्ष मात्र 20000 हैक्टेअर क्षेत्रफल पर प्रदर्शनों के आयोजन हेतु प्रस्तावित किया। परन्तु महानिदेशक द्वारा इसे कृषि आयुक्त से अधिक बढ़ाने एवं इस मद में रू. 100 करोड़ की धनराशि का प्रावधान कराने का आग्रह किया। साथ ही ततीय पक्ष (थर्ड पार्टी) से प्रदर्शनों का मूल्यांकन कराये जाने पर बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा अवमुक्त प्रजातियों के साथ–साथ आई.सी.ए.आर. संस्थानों, आल इण्डिया कोआर्डिनेटेड प्रोजेक्ट द्वारा विकसित प्रजातियाँ एवं तकनीकी को इस कार्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए। साथ ही साथ प्रयुक्त नवीन प्रजातियाँ जो प्रदर्शन में शामिल की गई हैं, उनका बीज उत्पादन भी किया जाए तथा उस बीज को अगले वर्ष किसानों तक पहुँचाया जाए। दलहन/तिलहन उत्पादन का औसत एवं प्रदर्शन उपज के औसत उत्पादन के बीच के अन्तर को कम किया सके साथ ही देश दलहन/तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भर बनें व दलहन/तिलहन आयात न करना पड़े। इस कार्यक्रम में आई.सी.ए.आर. संस्थानों, कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विभाग, इफको एवं निजी संस्थायें भी प्रदर्शन आयोजित कराती हैं। अच्छा होगा कि यह सभी संस्थायें मिल कर आम सहमति से प्रदर्शनों का उत्कृष्ट आयोजन करें जिससे किसानों के बीच अच्छा संदेश जाये तभी दलहन एवं तिलहन में क्रान्ति संभव होगी। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जहाँ नवीनतम प्रजातियों को प्रदर्शन में शामिल किये जाने पर बल दिया जाता है, वहीं कुछ पुरानी प्रजातियाँ जो अच्छा उत्पादन देने के साथ–साथ बीमारियों एवं कीड़ों के प्रति असंवेदनशील हैं तथा क्षेत्र विशेष में अच्छा प्रदर्शन कर रही हैं, उन्हें भी प्रदर्शनों में शामिल किया जाना चाहिए।

अन्त में उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार) डा. ए.के. सिंह, भा.कृ.अनुप. नई दिल्ली ने अपनी ओर से सभी का समीक्षा बैठक में अपने अमूल्य सुझावों हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।